

वचा-(एकोरस कैलेमस): वाणी और बुद्धि वर्धक

प्रमोद कुमार सिंह¹, अजय कुमार तिवारी², संजीव कुमार ओझा³ एवं श्रीकृष्ण तिवारी⁴
^{1,2}परियोजना सहायक, ³वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं ⁴वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
सी0एस0आई0आर0-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान
राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ-226001, उ0प्र0, भारत
drsanjevojha@yahoo.co.in

सार

वचा एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जिसका प्रयोग वैदिक एवं आधुनिक समय से चिकित्सा कार्य में होता आ रहा है। यह चिकित्सा के आद्यग्रन्थ आयुर्वेद में वर्णित एक अत्यंत महत्वपूर्ण चिकित्सोपयोगी औषधि है जिसका प्रयोग मेध्य, वातशामक, कास-श्वांस हर, मूत्रल, गर्भाशय संकोचक आदि होने के कारण पक्षाघात, संधिवात, आमवात, मूत्रकृच्छ्र, मानसिक दौर्बल्य, अपतंत्रक, कष्टप्रसव आदि रोगों में किया जाता है। इसमें पाए जाने वाले अल्फा एवं बीटा एसारोन प्रमुख कार्यकारी रासायनिक यौगिक हैं। आधुनिक शोधकर्ताओं ने भी वच की एंटी-ऑक्सिडेंट, एण्टी-कोलिनस्टरेज, डोपामिनर्जिक, एवं एण्टी-कैंसर आदि गुणों की पहचान के चलते इसे अत्यंत चिकित्सोपयोगी बताया है।

बीज शब्द- वचा, कृषि तथा आयुर्वेद।

Vacha-(Acorus calamus): speech and intellect enhancer

Pramod Kumar Singh¹, Ajay Kumar Tiwari², Sanjeev Kumar Ojha³ and Shri KrishnaTewari⁴

^{1,2}Project Assistant, ³Senior Scientist and ⁴Senior Principal Scientist
CSIR - National Botanical Research Institute
Rana Pratap Marg, Lucknow, 226001, U.P., India
drsanjevojha@yahoo.co.in

Abstract

Acorus calamus is an important medicinal herb that is widely used in modern researches as was in ancient Vedic periods. The rhizomes are used in various Siddha, Unani and Ayurvedic medicines. In Ayurvedic system of medicine the powder of this drug is being used to produce therapeutic purposes as like in children (chanting) to improve / rectify the speech defect and improving the memory power is in vogue in most of the rural areas of India. It also shows excellent Ayurvedic properties called Gunas as like Medhya guna, Rasayn karm, Jwarhar, Sothhar, Krimihar, Vatasamak, etc. Some of the Ayurvedic formulations with this drug are Vachadi taila, Ashwagandharishta Sarasvata churna, Sanjivani vati, Kumar rasayan, Vachabrahmi yog etc. Different parts of the plant showed the presence of large number of phenyl propanoids, sesquiterpenes and monoterpenes as well as xanthone glycosides, flavones, lignans, steroids and inorganic constituents. Alpha and Beta and -asarone are the primary constituent and mainly believed to be responsible for its wide therapeutic actions. It is also reported to possess insecticidal, larvicidal, anti-bacterial, anti-cancers, anti-ulcer, anti-convulsant, anti-epileptic and many more effects.

Key word: Acorus, Agriculture and Ayurveda

1. प्रस्तावना

चिकित्सा विज्ञान की प्राचीन एवं आधुनिक पद्धतियों में जड़ी-बूटियों का विशेष योगदान रहा है। अनेक वनस्पतियाँ ऐसे सार तत्वों का संश्लेषण करती हैं जो मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए उपयोगी होती हैं। अधोलिखित लेख में औषधीय पौधा वचा के कृषि तथा औषधीय महत्व को बताया गया है। इसका वचा नाम वचन अर्थात् बोलने की शक्ति का विकास करती है, वाणी साफ व अच्छी करती है। इसे विभिन्न नामों से जानते हैं जैसे संस्कृत में भूतनाशिनी, उग्रगन्धा, मत्स्यगन्धा-मछली जैसी तीक्ष्ण गंध युक्त, षड्ग्रन्था- छः गाँठों वाली, गोलामी-गौ के समान रोग युक्त, आयुर्वेद में वचा, तमिल में वेशम्बू, हिन्दी में घोड़वच, घुड़ वच, हेमवती-हिमालय प्रदेश में होने के कारण, गुजराती में घोड़ा वच, यूनानी में अकुरन, अरबी में उदलबुज, मराठी में बेखंड तथा अंग्रेजी में स्वीट लैंग कहते हैं।



**वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका।
क्षुद्रपत्री च मांगलया जटिलोग्रा च लोमशा।।
वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वांतिवह्निकृत।
विबन्धाध्मानशूलध्नी शकृन्मूत्रविशोथिनी।।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्दरेतत्।। "भावप्रकाश निघण्टुः"**

लैटिन में इसे एकोरस(कुल-एरेसी) कहते हैं। एकोरस ग्रीक भाषा के "एकोरोन" शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ कोरियन (ऑख की पुतली) तथा कैलेमस भी ग्रीक भाषा के कैलामोस से लिया गया है जिसका अर्थ है रीड (ईख या नरकुल) है। औषधीय वचा को प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थों में सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ है यून तो इसके सभी भागों का प्रयोग बाहरी व आंतरिक तौर पर अकेले एवं अन्य वनोषधियों के साथ अनेकों प्रकार की बीमारियों के ईलाज में होता है पर कई बार इसके कंदों का प्रयोग ही औषधि के रूप में होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी पत्तियों का प्रयोग टोकरी व चटाई बनाने के काम में भी किया जाता है। हिमाचल प्रदेश में इसे वरें के नाम से जाना जाता है। एक लोकगाथा के अनुसार जहाँ वणा, बसुट्टी, वरें पाई जाती है वहाँ पर आदमी की मृत्यु असम्भव है।



2. वनस्पतिक विवरण

यह बहुवर्षीय पौधा है, जो एक मीटर तक ऊँचे, सीधे, हरे रंग के व कोमल होते हैं। यह नदी, झील तालाबों के किनारे दलदली भूमियों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है।

राइजोम- इसका मूल स्तम्भ अंतःभूस्तारी अन्य पौधे की तरह सीधा नहीं रहता है बल्कि बहुत सी जटा के सदृश जड़ की शाखायें चारों तरफ फैली हुई होती है तथा इसकी मोटाई मध्यमा अंगुली (लगभग 2.5 सेमी. तक) के समान होती है प्रत्येक गाँठों के चारों ओर सघन रोयें होते हैं तथा 5-6 संधि (पर्व) होती हैं यह पौधे का उपयोगी भाग है जिसको औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।

जड़- इसमें पतली रोम सदृश लम्बी जड़ें पाई जाती हैं जो जमीन के नीचे सतह तक फैली हुई होती है।

पत्ती- इसकी पत्तियाँ सीधी तलवार की भाँति 60 सेमी तक लम्बी व 1.25–2.50 सेमी चौड़ी होती हैं तथा पत्तियों के बीच में एक मोटी प्राथमिक सिरा होती है जिससे अनेक द्वितीयक एवं तृतीयक सिरायें निकली रहती हैं।

पुष्प- इसके पुष्प मई-जून महीने में आते हैं जो लम्बे, आवृन्त, बेलनाकार, खुशबूदार तथा हरे-भूरे रंग के होते हैं। जो कि 5–10 सेमी, के स्पेडिक्स पुष्पक्रम में व्यवस्थित रहते हैं।

पुष्पमंजरी- यह 2–4 इंच लम्बी, 0.5–0.75 इंच व्यास वाली, किंचित वक्र और 6–30 इंच लम्बे पत्रकोशों से आवृत रहती है।

फल- इसके फल छोटे गोल मांसल बेरी होते हैं तथा इसमें कुछ बीज होते हैं यह जुलाई माह में लगते हैं।

भावप्रकाश निघण्टु: के अनुसार चार प्रकार की वचा का वर्णन है जो निम्नवत् है-

क्र.सं.	नाम	वानस्पतिक नाम	कुल	परिचय
1.	वचा (घोड़ वचा)	<i>एकोरस कैलेमस</i>	<i>ऐरेसी</i>	यह पुष्प भेद से तीन प्रकार के होते हैं-1. भवेत 2. रक्त 3. नील। उपरोक्त वर्णित वचा।
2.	बाल वचा (पारसीक वचा)	<i>आईरिस जर्मैनिका</i>	<i>इरीडेसी</i>	ईरान एवं कश्मीर में विशेषतया पायी जाती है, यह मुसलमानों के कब्र पर लगी मिलती है अतः इसे मजार पोश या मजार मुंड(कब्र का फूल) कहते हैं।
3.	द्वीपांतर वचा	<i>स्माइलेक्स चाइना</i>	<i>लिलिएसी</i>	भाव प्रकाश ने इसे फिरंगामय नाशिनी(फिरंग रोग को खत्म करने वाला) कहते हुए फिरंग उपचार में प्रयोज्य बताया।
4.	महाभरी वचा (कुलंजन)	<i>एल्पीनिया गैलेंगा</i>	<i>जिन्जीबरेसी</i>	यह विशेष रूप से जावा एवं सुमात्रा का मूल निवासी है। किंतु अब यह बंगाल के पूर्वी भाग एवं दक्षिण भारत में विशेषतः पाया जाता है।

3. प्राप्ति स्थान/ भौगोलिक अध्ययन

वचा को एशिया खंड का मध्य भाग तथा पूर्वी यूरोप को उत्पत्ति स्थान माना जाता है। यह मणिपुर व नागालैण्ड की पहाड़ियों पर तथा कश्मीर की दलदली भूमियों में प्राकृतिक रूप से मिलता है। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश में दलदली भूमियों, झीलों व नदियों के किनारे पाया जाता है। अत्यधिक औषधीय उपयोगी होने तथा असम्यक दोहन के कारण यह लुप्त प्राय प्रजातियों के रूप में सूची बद्ध है। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर (आई०यू०सी०एन) के अनुसार गत वर्षों में प्राकृतिक रूप में पाये जाने वाले पौधों की संख्या में 20% की कमी आई है। अनुमानतः 77% वचा खेती द्वारा प्राप्त की जाती है एवं 23% जंगलों से एकत्र किया जाता है। भारत में कुल वचा का उत्पादन 5,725 विवंटल प्रति वर्ष है। इसकी खेती कर्नाटक राज्य के कोराटगेरे तालुका नामक प्रायद्वीप पर नियमित एवं व्यावसायिक स्तर पर की जाती है।



जलवायु

यह भारत वर्ष में उपोष्ण कटिबन्धीय से शीतोष्ण कटिबन्धीय भागों में 1800–2600 मीटर की ऊँचाई तक प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। इसके लिए 10–38 डिग्री से० तापमान व 70–250 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह खरीफ ऋतु की फसल है। ग्रीष्म तथा वर्षा के समय उचित नमी होने पर इसकी अच्छी बढ़वार तथा अधिक उपज प्राप्त होती है।

भूमि एवं उसकी तैयारी

वच प्राकृतिक रूप में दलदली स्थानों पर पाया जाता है। इसके लिए चिकनी दोमट एवं जलोढ़ मृदा सर्वोत्तम रहती है। 5.5–7.5 पी. एच. तक की मिट्टी में वच की खेती अच्छी प्रकार से की जा सकती है तथापि इसे 9.0–9.5 पी.एच. तक सफलतापूर्वक उगाया जा

सकता है। खेत की तैयारी के लिये अच्छी प्रकार से जुताई करके खरपतवार से रहित कर देना चाहिए फिर अच्छी प्रकार समतल कर लेना चाहिए।

बुवाई/रोपाई

फसल के समय प्रकन्द के परिपक्व भाग काट दिये जाते हैं पहले रोपण से प्राप्त प्रकन्दों को मिट्टी में संरक्षित रखा जाता है और उनमें नमी रखी जाती है। उद्भव के बाद प्रकन्दों को 4-5 सेमी, लम्बे टुकड़ों में काट लेना चाहिए इन टुकड़ों को पॉलीथीन के पैकेट में मिट्टी भर कर या खेत में 4-5 सेमी की गहराई में फरवरी-मार्च माह में 40 25 सेमी के अंतराल पर लगा देना चाहिए तथा बाद में पानी भर देना चाहिए। प्रकन्दों का रोपण इस तरह से करना चाहिए कि दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति वाले पौधों के सामने ना आकर उनके बीच में आये। इसकी फसल में हमेशा नमी रहनी चाहिए। उपरोक्त अंतराल पर रोपाई करने के लिए एक हैक्टेयर खेत में लगभग एक लाख प्रकन्दों की आवश्यकता होती है।

खाद

वच के खेत में 15-20 टन गोबर या कम्पोस्ट की खाद को खेत की तैयारी के समय अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

अंतःशस्य क्रियाएं

वच एक जल प्रिय फसल है और लगभग पूरे वृद्धि काल में इसमें पानी भरा रहता है जिसके कारण खरपतवार कम होते हैं। अतः इसमें निराई की आवश्यकता नहीं रहती। यदि खरपतवार अधिक हो जाए तो प्रारम्भिक 4-5 महीने में एक बार निराई अवश्य कर देनी चाहिए।



कीट एवं रोग नियंत्रण

सामान्यतः वचा में रोग व कीटों का प्रकोप होने की सम्भावना कम ही होती है। इसमें मुख्यतः पत्तों में धब्बे लगने वाली बीमारी लगती है जिसके नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफास 20 मिली/10 लीटर पानी के साथ छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई

रोपण के पश्चात, विशेषकर मई-जून के महीने में नमी समाप्त होने के पहले ही सिंचाई कर देनी चाहिए। वच आर्द्र व दलदली भूमियों में पाया जाता है अतः इसमें सिंचाई की विशेष आवश्यकता नहीं होती है यदि बारिश न हो तो 7-8 दिनों के अंतराल पर सिंचाई कर देना चाहिए। मई-जून के महीने में नमी समाप्त होने के पहले ही कर देनी चाहिए।

प्रकन्दों की खुदाई

वच की फसल लगभग 10-11 महीनों में तैयार हो जाती है। इसकी खुदाई जनवरी-फरवरी के महीने में करते हैं जब इसकी पत्तियाँ पीली होकर जमीन पर लेट जाती हैं। यही प्रकन्दों की खुदाई का उपयुक्त समय है तथा ऊसर या बंजर भूमियों में इसे दूसरे वर्ष खोदना लाभकारी होता है। खुदाई के पश्चात प्रकन्दों को अच्छी प्रकार छाया में सुखा लेना चाहिए।



उपज

वच की अच्छी फसल से लगभग 250-300 कुंतल प्रति हैक्टेयर तक प्रकन्दों (राइजोम) की पैदावार हो जाती है। ताजी अवस्था में इसमें 70-80% तक नमी पाई जाती है। इसको अच्छी तरह सूखने के पश्चात ही भण्डारित करना चाहिए।

4. रासायनिक संगठन

वच के प्रकन्दर में 1.5–3.5% तक वाष्पशील तेल पाया जाता है जिसमें प्रधानतः एसारिल ऐलिहाइड होता है। इसके अतिरिक्त 4% कैलेमेन, 5% कैलेमेनोल, 1% केलामेनोन होता है। इसमें दो क्रियाशील तत्वों एल्फा-एसारोन व बीटा-एसारोन का निरूपण किया गया है। एकोरिन नामक ग्लाइकोसाइड तिक्त सत्व एवं केलामीन नामक भस्म तत्व, 25: तक रेजिन एवं टैनिन, म्यूसिलेज, युजिनोल, पाइनीन, मोनोटर्पीन हाइड्रोकार्बन, सेक्यूस्टरीन कीटोन, कैम्फीन, स्टार्च तथा कैल्सियम आक्जैलिक आदि पाये जाते हैं।

नवीनतम शोधों के द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि तेल की संरचना और बीटा-एसारोन की मात्रा गुणसूत्रों पर निर्भर करती है। जो निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है—

क्र.सं.	गुणसूत्रों की संख्या	बीटा-एसारोन की प्रतिशत मात्रा
1.	द्विगुणित (2n) = 24	<1%
2.	त्रिगुणित (3n) = 36	8-19%
3.	चतुर्गुणित (4n) = 48	10-96%

रासायनिक संरचना— बीटा-एसारोन



आयुर्वेद के अनुसार

1. रस— कटु, तिक्त 2. गुण— लघु, तीक्ष्ण 3. वीर्य—उष्ण 4. विपाक—कटु
5. प्रभाव—मेध्य

प्रयोज्यांग : मूल एवं भूमिगत कांड(तना)

प्रयोज्य मात्रा: 125–500 मिग्रा.

वचा के कर्मों का आयुर्वेदिक एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक विवरण—



वचा का शोधन— अशुद्ध वचा के शोधन के लिये भैशज्य रत्नावली(24/44) नामक आयुर्वेदिक ग्रंथ में निम्न विधि का वर्णन किया गया है—

अशुद्ध वचा—गो मूत्र तथा गोरखमुंडी में पकावें—अवशेष को पंचपल्लव* के क्वाथ में स्वेदन करें—स्वेदित वचा को सुखा कर गन्धोदक से प्रक्षालित कर सुखा लें—मिट्टी की हाण्डी में गन्धोदक** भरकर उसके ऊपर पेंदे में छिद्रित दूसरी हाण्डी में वचा को भरकर एक घंटे तक स्वेदित कर लें—तत्पश्चात् वचा को 1 घंटे तक गो मूत्र में रख दें—फिर सहजन की छाल के क्वाथ से धोकर तथा गन्धोदक से धो लें—फिर मरुआ और मल्लिका के पुष्पों के ढेर के मध्य रखकर सुवासित करें—शुद्ध वचा—शुद्ध वचा को सुखाकर कूट कर चूर्ण बना कर राल, कुन्दरु तथा नखी आदि गन्ध द्रव्यों के धूप से धूपित कर कांच के पात्र में रख लें।

पंच पल्लव*— आम, जामुन, कैथ, बीजपुर नींबू एवं विल्व इन पाँचों वृक्षों के पत्तों को पंच पल्लव कहते हैं।

गन्धोदक**— तेजपत्र, पत्रक, खश, मोथा, बला(प्रत्येक 2 ग्रा0) व कुष्ठ(1 ग्रा0) को जल(33 ग्रा0) में अर्धांश शेष रहने तक उबाल कर गन्धोदक का निर्माण किया जाता है।

क्र.सं.	आयुर्वेदिक गुण एवं सन्दर्भ	आधुनिक गुण	सन्दर्भ
1	बलवर्धक(सु0स0)	एंटी-ऑक्सिडेंट	गोविन्द राजन एवं सहयोगी
2	(अ) बुद्धिवर्धक (सु0स0) (ब) मेध्य (ध0नि0)	एण्टी-कोलिनेस्टेरेज	विजयापंदी एवं सहयोगी-2013
		डोपामिनेर्गिक	वेंगदेश प्रभू एवं सहयोगी-2009
		एनएमडीए एंटागोनिष्ट	लिमोन एवं सहयोगी-2009
		बी एमायलोज प्रतिकारक	जैंग एवं सहयोगी-2010
		न्युरोप्रोटेक्सन	मुथुरमन एवं सिंह-2012
		नूट्रापिक	देशमुख, पी0 बी0 एवं सहयोगी-1982
3	वातशामक (ध0नि0)	एण्टी-इचिंग	अग्रवाल, ए0 के0-1997 एवं राजगोपालन वी0-1995
		एण्टी-एंजायटी	कुलकर्णी, पी0 एच0 1995 एवं खरे ए0 के0-1982
4	अपस्मार (मिर्गी) हर (भा0प्र0, चक्रपाणि)	एण्टी-कंवल्सेंट	बैडम, एल0-1995
		एण्टी-सिजोफ्रेनिया	सिंह, आर0 पी0 एवं सहयोगी-1991
		एण्टी-एपिलेप्टिक	हजारे, आर0 एवं सहयोगी-2007
5	शोथहर एवं शूलहर (भा0प्र0 एवं ध0नि0)	एण्टी-इंफ्लामेटरी	सिद्दीकी, एम0 टी0 ए0 एवं आसिफ, एम0-1991
		एण्टी-अल्सर	किलर के0 एवं सहयोगी-1985
6	कृमिनाशक (ध0नि0)	इंसेक्टीसाइडल	शिमिजू, एम0 एवं सहयोगी-1993
		एण्टी-माइक्रोबियल	वास्सी, आई0 जी0 एवं पटेल एच0 सी0-1987
		एण्टी-वाइरल	माम्मोन, पी0 एवं सिंह, आर0 एच0-1994
7	वेदनास्थापक (ध0नि0)	ट्रैं कुलाइजर	शर्मा0 आर0 एवं सहयोगी-1993
		एण्टी-स्पैस्मोडिक	डोमबेक, सी0; लिबर्टी, एल 1989 एवं विजया, के0 एवं अनंथान, एस0-1994
8	भवास, कासहर (भा0प्र0)	एण्टी-अस्थमेटिक	चंद्रशेखर, एच0 आई0-1982
9	आमवात(भा0प्र0)	एण्टी-रूमेटाइटिस	शर्मा, आर0 एवं सहयोगी-1983
10	हृदयोत्तेजक (भा0प्र0)	एण्टी-एंजाइनल	रफातुल्ला एस0 एवं सहयोगी-1984
11	मेदोहर (भा0प्र0)	हाइपोलिपिडिमिक	रेशमा एस0 एवं सहयोगी-2002
12	क्षुधावर्धक, कफोत्सारक, सन्निपातज्वर, नाशक, मूत्रजनक, मूत्रशोधक एवं गर्भाशयसंकोचक (भा0प्र0)		
13	वामक एवं कण्ठ्य (ध0नि0)		
14	मुखरोगनाशक(हारीत)		
15		एण्टी-कैंसर	पारिख एवं सहयोगी-1984

5. आयुर्वेदिक उपयोग

1. यह सुगंधित, तिक्त तथा कटु रस युक्त, उष्ण वीर्य, वामक, विबन्ध, अध्यमान, शूलनासक, मल व मूत्र का शोध करने वाली, मूत्रजनक, मिर्गी, कफ, उन्माद, कृमि तथा वायु को नष्ट करने वाली होती है।
2. यह वातानुलोमक, क्षुधावर्धक कफोत्सारक, वातशामक, शोथहर, पित्तवर्धक, संज्ञास्थापक, वेदनास्थापक, मेध्य शूलप्रशामक, हृदयोत्तेजक, भवास, कासहर के रूप में उपयोग किया जाता है।
3. इसे उदर शूल अग्निमाध, अतिसार, ज्वर, खांसी, गर्भाशयसंकोचक, सन्निपात ज्वर में विशेष उपयोगी, दमा व अपस्मार(मिर्गी) के उपचार में प्रयुक्त किया जाता है।
4. सन्धिवात, आमवात, पक्षाघात आदि में इसका लेप किया जाता है। कर्णनाद तथा कणशूल में इसका स्वरस कानों में देते हैं।
5. स्त्रियों के कष्ट प्रसव में केशर एवं पिप्पली मूल के साथ प्रयोग करते हैं।

6. वचा का औषधीय महत्व

1. वचा एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है आधुनिक चिकित्सा में इसका प्रयोग शताब्दियों पहले से किया जा रहा है यूनानी चिकित्सा के अनुसार यह मस्तिष्क शोधक, नाड़ी मण्डल, शक्तिवर्धक तथा आमाशय को शक्ति देने वाला यकृत विकार, नेत्र तथा दंत रोगों में अत्यधिक लाभप्रद है।
2. बच्चे जो जन्म के बाद जल्दी नहीं बोलते या तुतलाते हैं उनमें वाक् शक्ति को बढ़ाने हेतु इसका प्रयोग करते हैं तथा बालकों के दांत निकलते समय बुखार व दुर्बलता आदि को नष्ट करता है।
3. यह हृदय की गति को मंद करता है व रक्त भार को कम करता है।
4. बुद्धि को बढ़ाने हेतु कुमार रसायन में इसका प्रयोग किया जाता है।
5. इसका लेप मस्तक पर करने से सिर में होने वाले दर्द में लाभ होता है तथा इसका लेप नाक पर लगाने से जुकाम, सर्दी व इनफ्लुएंजा में लाभ होता है।
6. भावप्रकाश निघण्टुः के अनुसार वच के सेवन से मेधा शक्ति बढ़ती है इसके लिए वच को मधु या दूध के साथ अधिक दिन तक सेवन करना चाहिए। ब्राह्मी, शंखपुष्पी तथा वच तीनों को समान मात्रा में लेकर इसके चूर्ण को ब्राह्मी के रस के साथ देना चाहिए अथवा सारस्वत चूर्ण को आधा से एक मासा मधु एवं घृत के साथ कुछ दिन लेने से उन्माद, स्मरण शक्ति का ह्रास एवं वाणी की जड़ता आदि दूर होकर बुद्धि का विकास होता है।
7. वच में रहने वाले टैनिन के कारण इसका प्रयोग जीर्ण, अतिसार एवं संग्रहणी आदि में किया जाता है, इसके सेवन से आध्मान एवं शूल दूर होता है तथा पाचन सुधार कर भूख बढ़ती है।
8. आँख की धुन्ध में वच के स्वरस का अंजन करने में धुन्ध समाप्त हो जाती है तथा इसका प्रयोग शोक व चिंता में लाभप्रद होता है।
9. वच में मस्तिष्क तथा तंत्रिका तंत्र को दुबारा पैदा करने की शक्ति पाई जाती है।
10. वच के पाउडर को दूध के साथ मथ कर लेने से स्मरण व श्रवण शक्ति तथा आयु की वृद्धि होती है।
11. वच एक आश्चर्यजनक टानिक का काम करता है क्योंकि इसमें भूख को उत्तेजित करने की शक्ति पाई जाती है।
12. स्वर भेद में इसका टुकड़ा मुँह में रख कर चूसते हैं तथा वच का टुकड़ा रात-दिन मुख में रख कर छोड़ना चाहिए इससे मुख व्रण नट हो जाता है तथा गले की सूजन व खांसी में भी लाभदायक होता है।
13. इसका प्रयोग मक्खी-दीमक आदि कीड़ों को नष्ट करने में प्रयोग किया जाता है तथा प्राचीन काल में लोग इसके सूखे कंदों को कपड़ों के साथ रखते थे जिससे कीड़ों से बचाव होता है।
14. वच की पत्तियाँ जलाने के बाद निकलने वाला वाष्पशील तेल पूरे वातावरण में फैल जाता है जिससे विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीवों का नाश हो जाता है।
15. द्रव्यगुण विज्ञान के अनुसार श्वास रोग में 1-2 ग्राम वच का चूर्ण, 5-10 ग्राम सेंधा नमक और 400 मिली, पानी मिलाकर पीने से वमन होता है और श्वास का वेग कम हो जाता है।
16. वचा के कल्क से एक सौ बार सिद्ध किये घी का एक द्रोण मात्रा को खाने से पाँच सौ वर्ष की आयु होती है तथा गलगण्ड, अपची, शलीपद, स्वर भेद नष्ट हो जाते हैं। (सुश्रुत संहिता/चिकित्सास्थानम्, 28/8)
17. वच चूर्ण, सुवर्ण भस्म और विल्व चूर्ण इनको घी के साथ लेने से मेधा, आयुश्य, आरोग्य पुष्टि और सौभाग्य बढ़ता है। (सुश्रुत संहिता/चिकित्सास्थानम्, 28/17)

7. वच के विभिन्न औषधीय उत्पाद(योग)

- | | |
|--------------------|----------------|
| 1. वचाब्राह्मी योग | 2. वचादि चूर्ण |
| 3. सारस्वत चूर्ण | 4. मेध्य रसायन |

- | | |
|-----------------|-----------------|
| 5. वचादि घृत | 6. अवगन्धारिष्ट |
| 7. संजीवनी बूटी | 8. कुमार रसायन |
| 9. वचादि तैल | |

वचादि चूर्ण— वच का बारीक चूर्ण बनाकर दूध के साथ सेवन करने से जुकाम से उत्पन्न हुए गले या कण्ठ की क्षति में लाभ प्रद है।

वचादि घृत— बालवच, गुरुचि, कचूर, हरड़, शंखपुष्पी, सोंठ तथा अपामार्ग इन द्रव्यों का कल्क बनाकर तैयार किया गया वचादि घृत का सेवन करने से वाक शक्ति, मेधा, स्मृति तथा अग्निवर्धन करता है। (अष्टांगहृदय—उत्तर स्थान 1/46)

सारस्वत चूर्ण— वचा, कचूर, हल्दी, दारु, हल्दी, देवदारु, सोंठ, अजमोदा, शंखपुष्पी व मिर्च का चूर्ण बना कर ब्राह्मी स्वरस की भावना देकर छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा एवं अनुपान— 2-4 मासा सुबह शाम घृत वाहद के साथ

वचादि तैल— वच, कचूर, हल्दी, दारु हल्दी, देवदारु, सोंठ, हरड़, अतीस, नागरमोथा व इन्द्र जौ प्रत्येक का क्वाथ बना कर इसमें तेल व चकवड पंचाग स्वरस मिलाकर तैल को सिद्ध कर लेते हैं। तैल सिद्ध होने पर सीसे के सिन्दूर को मिलाते हैं। (शा.—मध्य खण्ड—9/115-117)

उपयोग—इस तैल में दारुण गण्डमाला भी ठीक हो जाती है।

8. सावधानियाँ

वच के ज्यादा सेवन से उल्टी आने लगती है। सम्भवतः एसारोन नामक तत्व इसका कारण है। इस कारण ही इसके उत्पाद व तैल 1968 में अमरीका (यूएसएफडीए) द्वारा प्रतिबंधित कर दिये गये। आयुर्वेद में इसका प्रयोग शोधन के पश्चात् बताया गया है जिसका उल्लेख उपरोक्त वर्णित है। बाजार में वच के काट कर सुखाये गये छोटे-छोटे टुकड़े मिलते हैं जिसमें प्रायः खत्मी (एल्विया ऑफीसिनेलिस एवं वाटर फ्लैग) (आईरिस स्यूडोकोरस) को ज्यादा व्यापारिक लाभ के लिए अपमिश्रण के तौल पर मिलाकर बेचा जाता है तथा भारत में कई स्थानों पर इसके स्थान पर प्रायः कुलंजन (एल्पीनिया गैलेंगा) की जड़ भी बेची जाती है। इसीलिए जहाँ वच की आवश्यकता हो वहाँ घोड़ वच के नाम से ही औषधि खरीदनी चाहिए।

9. निष्कर्ष

वचा चिकित्सा के आद्यग्रन्थ आयुर्वेद में वर्णित एक अत्यंत चिकित्सोपयोगी औषधि है जिसका प्रयोग मेध्य, वातशामक, कास—श्वासहर, मूत्रल, गर्भाशय संकोचक आदि होने के कारण पक्षाघात, संधिवात, आमवात, मूत्रकृच्छ्र, मानसिक दौर्बल्य, अपतंत्रक, कष्टप्रसव आदि रोगों में किया जाता है। इसमें पाए जाने वाले अल्फा एवं बीटा एसारोन प्रमुख कार्यकारी रासायनिक यौगिक हैं। आधुनिक शोधकर्ताओं ने भी वच की एंटी-ऑक्सिडेंट, एण्टी-कोलिनेस्टरेज, डोमिनेर्गिक, एनएमडीए एंटागोनिस्ट, न्युरोप्रोटेक्शन, एण्टी-एंग्जायटी, एण्टी-कंवल्लेंट, एंटी-एपिलेप्टिक, एण्टी-माइक्रोबियल, हाइपोलिपिडिमिक एवं एण्टी-कैंसर आदि गुणों की पहचान कर इसे अत्यंत चिकित्सोपयोगी बताया है। अतः उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वच का प्रयोग औषधि के रूप में प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों (आयुर्वेद, यूनानी एवं सिद्धा) तथा आधुनिक चिकित्सा पद्धति में वृहत् रूप में हो रहा है। यह मात्र स्वास्थ्य रक्षक औषधि ही नहीं अपितु इसकी सफल व्यावसायिक खेती से हमारे देश में बेकार पड़ी भूमि का सदुपयोग हो सकता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसकी खेती से हमारे अन्न उत्पादन पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि इसकी खेती बेकार पड़ी दलदली भूमि पर की जाती है तथा उत्पादित केन्दों के विक्रय एवं निर्यात से हमें आर्थिक लाभ के साथ-साथ विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होगी। शिक्षित

बेरोजगार युवक अनेक वित्त पोषित योजनाओं के अंतर्गत इसके औषधि उत्पादन की लघु इकाइयां भी स्थापित कर सकते हैं जो कि बेरोजगारी की समस्या में सहायक होगी। इस प्रकार की औषधीय फसलों की व्यावसायिक खेती से हमारे देश के ग्रामीण समाज की आर्थिक उन्नति के साथ इससे निर्मित औषधियों से एक ओर हमारा स्वास्थ्य सुरक्षित होगा तथा दूसरी ओर स्वच्छ, संतुलित पर्यावरण जिसकी हमें अत्यन्त आवश्यकता है, इसके भी अलावा हमारे आस-पास बेकार पड़ी भूमि का पूर्ण सदुपयोग के साथ वच को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है।

10. आभार

यह अध्ययन साइंस फॉर इक्विटी, इम्पॉवरमेंट एण्ड डेवलपमेंट(एसईईडी) प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित परियोजना वृद्धावस्था जन्य स्मृति हास के पारम्परिक उपचारों का पुनर्जीवन: आयुर्वेद में वर्णित प्राचीन भारतीय बौद्धिक ज्ञान का प्रलेखन एवं प्रसारण के अन्तर्गत किया गया है। इस परियोजना के अध्ययन एवं सम्पादन में निदेशक, सीएसआईआर- राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का अभूतपूर्व योगदान प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

सन्दर्भ

1. सहायक, गंगा एवं चुनेकर, कृष्ण चन्द्र(2002) "भाव प्रकाश निघण्टु", चौखम्मा भारती अकादमी, वाराणसी, भारत।
2. शर्मा, प्रियव्रत(आचार्य)(1992) "द्रव्यगुण"(द्वितीय भाग), चौखम्मा भारती अकादमी, वाराणसी, भारत।
3. घाडेकर, भास्कर गोविन्दजी एव पं. श्री लाल चन्द्र जी वैद्य(1975) "सुश्रुत संहिता", मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
4. श्रीवास्तव, शैलजा(1998) "शारंगधर संहिता", चौखम्मा ओरियंटलिया, वाराणसी, भारत।
5. शास्त्री, राजेश्वर दत्त(1993) "भैषज्य रत्नावली", चौखम्मा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, भारत।
6. त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द(1999) "अष्टागहृदय", चौखम्मा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली, भारत।
7. शर्मा, रवीन्द्र(2002) "औषधीय एवं सुगंध पौधों की कृषि तकनीक", दया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. राम, सुशील (1983) "वनौषधि-निर्देशिका", जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा.) लिमिटेड, वाराणसी।
9. पुष्पांगदन, पी0(2005) "एंटीऑक्सिडेंट ऐप्रोच टू डिजीज मैनेजमेंट एण्ड द रोल आफ रसायन हर्ब आफ आयुर्वेद", जर्न0 ऑफ इथनोफार्मा0, खण्ड 99, अंक 2, मु0प 0 165-178।
10. कुमार, राकेश; शर्मा, सौरभ; शर्मा स्वाति; सूद, स्वाति एवं सिंह, बिक्रम(2013) "वचा ने रचा महत्वपूर्ण उपयोगों का इतिहास", विज्ञान प्रगति, मई-2013, अंक-5, मु0पृ0 13-17।
11. पण्डित, विजय; अन्नबैथिना पी0; शिवा नागा वी0; श्रीकांत, बी0; मंजूनाथ, वी0.; बोगवरपु, पी0; मोहम्मद, ए0 के0; प्रसाद, के0 आर0 और कुमारपन्न, सी0 टी0(2013) "इन विट्रो एंटीकोलिनेर्जिक और एंटी हिस्टैमिनिक एक्टिविटीज आफ एकोरस कैलेमस" लिन0 लीव्स इक्सट्रैक्ट ए0जे0टी0सी0ए0एम0, खण्ड-10, अंक-1, मु0पृ0 95-101।
12. वेंगादेश, प्रबू; जॉर्ज, के0; कुमार टी0 विनोथ; नैसी, आर0 जे0; कलैवानी, एम0 एवं विजयापंडित, पी0(2009) "न्यूरोमोड्यूलेटरी इफेक्ट ऑफ एकोरस कैलेमस लीव्स इक्सट्रैक्ट ऑन डोपामिनरजिक सिस्टम इन माइस", ज0 फार्मा0 टेक0, खण्ड 1, अंक 4, मु0पृ0 1255-1259।
13. एसपिनोसा, बी0; जेंटो, ई0 एवं गुवारा, जे0(2009) "न्यूरोप्रोटेक्टिव इफेक्ट ऑफ अल्फा-एसोरोन ऑन स्पेसियल मेमोरी एंड नाइट्रिक ऑक्साइड लेवल इन रैट इन्जेक्टेड विथ अमायलोइड", ए0 न्यूरोसाइंस लेटर्स, खण्ड 453, अंक-2, 3, मु0पृ0 98-103।
14. जेंग, वाई0; ली, सी0; लुई, जे0; झाऊ, एल0; डोंग, एम0; ली, एक्स0 एवं नीऊ, वाई0(2010) "बीटा-एसरोन इम्प्रेक्स कोगनिटिव फंक्शन बाइ स्रपेस इन न्यूरोनल एपोपटोसिस इन दी बीटा-अमायलोइड हिप्पोकैम्पस इंजेक्शन", रैट0 बायो0 फार्मा0 बुल0, खण्ड 33, अंक 5, मु0पृ0 836-843।

15. मुथूरमन, ए0 एवं सिंह, एन0(2012) "न्यूरोप्रोटेक्टिव इफेक्ट ऑफ सैपोनिन रिच एक्सट्रेक्ट ऑफ एकोरस कैलेमस इन रैट मॉडल ऑफ क्रोनिक कान्सट्रकसन इनजरी आफ सियाटिक नर्व इंड्यूज्ड न्यूरोपैथिक", पेन0 जे0 इथनोफार्मेको0, खण्ड 142, अंक-3, मु0पृ0 723-731।
16. राजगोपालन, वी0(1995) "सेमीनार ऑन रिसर्च इन आयुर्वेद एंड सिद्धा", 20-22 मार्च, पृ0 34।
17. डेट, बी0 बी0 एवं कुलकर्णी, पी0 एच0(1995) "आयुर्वेदा रिसर्च पेपर-2", मु0पृ0 15-24।
18. खरे, ए0के0 एवं शर्मा एम0 के0(1982) ज0 साइंस, रिस0 प्लांट्स एण्ड मेडिसीन्स, खण्ड 3, अंक 4, मु0पृ0 100-103।
19. मैमगैन, पी0 एवं सिंह, आर0 एच0(1994) ज0 ऑफ रिसर्च, इन आयुर्वेदा एण्ड सिद्धा, खण्ड 15, अंक 1-2, मु0 पृ0 35-51।
20. किलर, के0; ओडेंथल, के0 पी0 एवं लेंग पेस्कोलो(1985) ई0 प्लांटा मेडिका0, अंक-1, मु0पृ0 6-9।
21. इम्बेक, सी0 एवं लिबर्टी एल0(1989) "एको0 कैलेमस", लारेंस रिव्यू ऑफ नेचूरल प्रोडक्ट्स, अंक 7, मु0पृ0 1-2।
22. विजय, के0 एवं अनंथन, एस0(1994) बायोमेडिसीन, खण्ड 14, अंक 1, मु0पृ0 21-23।
23. सिद्दिकी, एम0 टी0 ए0 एवं आशिफ, एम0(1991) कांफ्रेंस ऑफ फार्माकोलॉजी एण्ड सिम्पोजियम आन हर्बल ड्रग्स, पृ0 23।
24. पारिख, एम0 डी0; प्रधान, पी0 वी0; शाह, एल0 पी0 एवं बगाडिया, वी0 एन0(1984) ज0 रिस0 आयुर0 सिद्धा0, खण्ड 5, अंक 1-9, मु0पृ0 12-17।
25. देशमुख, पी0 बी0; चवन, एस0 आर0 और रेनापुरकार, डी0एम0(1982) पेस्टीसाइड, खण्ड 16, अंक 12, मु0पृ0 7-12।
26. सिंह, आर0 पी0(1991) इंडियन परफ्युम, खण्ड 35, अंक 1, मु0पृ0 35-37।
27. शिमिजु, एम0 एवं शोयाकुगाकु, जैसी(1993) रिसर्च ज0 फार्मा0 एण्ड टेक0 2(2) एकोरस कैलेमस इन : केमिस्ट्री एण्ड बायोलॉजी, खण्ड 47, अंक 1, मु0पृ0 1-4।
28. शर्मा, आर0 ए0 एवं तिवारी, पी0 वी0(1993) जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन इन इंडियन मेडिसीन, खण्ड 12, अंक 1, मु0पृ0 15-26।
29. शर्मा, आर0; कुमार, ए0 एवं तिवारी, पी0 वी0(1993) जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन इन इंडियन मेडिसीन, खण्ड 12, अंक 1, मु0पृ0 15-26।